{ खुद के लिए जीने वाले की ओर कोई ध्यान नहीं देता पर जब आप दूसरों के लिए जीना सीख लेते हैं तो वे आपके लिए जीते हैं - परमहंस योगानंद }

सम्पादकीय

दिल्ली के जनादेश का संदेश

भाजपा ने जीता एक और राजनीतिक दुर्ग

भाजपा ने दो तिहाई बहुमत से दिल्ली विधानसभा चुनाव जीतकर एक और कठिन समझे जाने वाले राजनीतिक दुर्ग को अपने नाम कर लिया। हरियाणा और महाराष्ट्र के बाद दिल्ली में भी उसकी प्रभावशाली जीत यह और अच्छे से स्पष्ट कर रही है कि लोकसभा चुनावों में उसे जो झटका लगा था, वह अस्थायी था और वह इस झटके से पूरी तरह उबर चुकी है।

नि:संदेह दिल्ली पूर्ण राज्य भले न हो, लेकिन देश की राजधानी होने के नाते उसका विशेष राजनीतिक महत्व है। दिल्ली की गतिविधियां शेष देश में कहीं गहरा असर डालती हैं। भाजपा ने दिल्ली जीतकर एक और राज्य में डबल इंजन सरकार बना ली, लेकिन इसी के साथ उसके कंधों पर राजधानी को संवारने की चुनौती आ गई है। उसे इस चुनौती को पूरा करने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने होंगे, क्योंकि देश की अंतरराष्ट्रीय छवि बहुत कुछ दिल्ली पर निर्भर करती है।

दिल्ली की जीत ने जहां भाजपा को राजनीतिक रूप से कहीं अधिक मजबूती देने का काम किया, वहीं विपक्षी दलों और उनके मोर्चे आइएनडीआइए को यह संदेश दिया कि यदि उसने अपनी रीति-नीति नहीं बदली तो आगे और अधिक कठिनाई होने वाली है। दिल्ली के चुनावों ने यह दर्शाया है कि विपक्षी गठबंधन की एकजुटता खतरे में पड़ चुकी है। आने वाले समय में आइएनडीआइए के छोटे-बड़े घटक आपस में ही और जोर-शोर से लड़ते और अपनी अलग राह चलते दिखें तो हैरानी नहीं।

दिल्ली में भाजपा की जीत ने यह भी बताया कि आम आदमी पार्टी अपने ही सबसे मजबूत गढ़ में लोगों का भरोसा कायम नहीं रख सकी। इसके लिए अरविंद केजरीवाल के अलावा और कोई जिम्मेदार नहीं। केजरीवाल ने मुख्यमंत्री और पार्टी प्रमुख के रूप में अपने कार्य-व्यवहार से दिल्ली के साथ शेष देश के लोगों को भी निराश किया, क्योंकि उन्होंने नई तरह की राजनीति का सपना दिखाया था।

यह सपना इसीलिए ध्वस्त हो गया, क्योंकि केजरीवाल ने जो कुछ कहा, उसके खिलाफ काम किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने आरोप लगाओ और भाग जाओ वाला तरीका तो अपनाया ही, अनगिनत यू-टर्न लिए और भ्रष्टाचार से लड़ने वाले नेता की अपनी छवि को अपने ही हाथों नष्ट किया।

राष्ट्रीय दल का दर्जा पाने के बाद भी आम आदमी पार्टी औरों की तरह एक और दल के रूप में तब्दील हो गई।लोगों ने अन्ना आंदोलन की उपज केजरीवाल का साथ इसलिए नहीं दिया था कि वे अन्य दलों सरीखा एक और दल देखना चाहते थे। वे तो देश में बुनियादी राजनीतिक बदलाव होते हुए देखना चाहते थे।

अफसोस कि केजरीवाल ने इसके लिए कोई कोशिश तक नहीं की। दिल्ली ने आम आदमी पार्टी के साथ कांग्रेस को भी सबक सिखाया और सबसे बड़ा सबक यही है कि वह अपने बलबूते लड़ना सीखे और जिम्मेदार राष्ट्रीय दल जैसा व्यवहार करे।

विशेष

अब दिल्ली में भी पलट गई बाजी केजरीवाल की चुनौतियां बढ़ना तय

चुनाव के समय आप की रंगत इसलिए फीकी दिख रही थी क्योंकि उसका ज्यादातर समय आरोपों का जवाब देने में जाया हो रहा था। वह दिल्ली की समस्याओं के लिए केंद्र को दोष दे रही थी लेकिन जनता को दिख रहा था कि आप सरकार अपने हिस्से के भी काम नहीं कर रही। दिल्ली की जनता को अपनी समस्याएं कम होने के स्थान पर बढ़ती दिख रही थीं।

■ संजय गुप्त

आखिरकार भाजपा ने दिल्ली की सत्ता हासिल कर ली। वह 27 वर्षों से दिल्ली की सत्ता से बाहर थी। दिल्ली की सत्ता से भाजपा के बाहर होने के बाद कांग्रेस ने लगातार 15 साल शासन किया। 2013 के विधानसभा चुनावों में अन्ना आंदोलन से निकली आम आदमी पार्टी ने 70 में से 28 सीटें जीतकर चमत्कार सा कर दिया।

आप ने जिस कांग्रेस को सत्ता से बाहर किया, उसी ने उसकी सरकार बनाने में इसलिए मदद की ताकि भाजपा को सत्ता से दूर रखा जा सके। मुख्यमंत्री बने अरविंद केजरीवाल ने कांग्रेस से मतभेदों के चलते 49 दिन बाद त्यागपत्र दे दिया। इसके बाद राष्ट्रपति शासन लगा और जब 2015 में विधानसभा चुनाव हुए तो आप ने 67 सीटें जीत कर चकित कर दिया। इसलिए और भी, क्योंकि 2014 के लोकसभा चुनावों में मोदी पूर्ण बहुमत के साथ प्रधानमंत्री बन चुके थे।

इसी तरह 2020 में भी आप ने 62 सीटें जीतीं और वह भी तब जब 2019 के लोकसभा चुनाव में मोदी को प्रचंड बहुमत मिला था। इस बार विधानसभा चुनावों में आप मुश्किल में दिख रही थी, क्योंकि केजरीवाल समेत आप के बड़े नेता भ्रष्टाचार के आरोप में जेल जा चुके थे। इससे केजरीवाल की भ्रष्टाचार से लड़ने वाले नेता की छवि को धक्का लगा।

मुख्यमंत्री आवास की साजसज्जा में 40 करोड़ से अधिक धन खर्च किए जाने से भी जनता को यह लगा कि केजरीवाल की कथनी-करनी में अंतर है। लगता है केजरीवाल ने अन्ना हजारे की इस नसीहत पर ध्यान नहीं दिया कि राजनीति काजल की कोठरी होती है। इससे बड़ी विडंबना और कोई नहीं कि जो पार्टी भ्रष्टाचार से लड़ने का दावा कर रही थी, उसी पर घपले-घोटाले का आरोप लगा। हालांकि केजरीवाल ने यह बताने की कोशिश की कि उन पर झूठा आरोप लगाकर उन्हें बदनाम किया गया, लेकिन नतीजे बता रहे कि उनकी सफाई जनता को रास नहीं आई। वह खुद भी चुनाव हार गए।

समय के साथ आम आदमी पार्टी एक ऐसा दल बनी थी, जिसने दो राज्यों-पहले दिल्ली और फिर पंजाब में सरकार बनाई और राष्ट्रीय दल का दर्जा पाया। दिल्ली में हार से आप को करारा झटका लगा है, लेकिन वह अब भी एक राजनीतिक ताकत है। इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि आप से मुकाबले के लिए भाजपा को उसके जैसे ही तौर-तरीके अपनाने पड़े। उसे न केवल यह घोषणा करनी पड़ी कि आप सरकार की जनकल्याणकारी योजनाएं जारी रहेंगी, बल्कि कुछ नई लोकलुभावन घोषणाएं भी करनी पड़ीं। तथ्य यह भी है कि आप ने रेवड़ियां बांटने की जो राजनीति शुरू की, उसे कई अन्य दलों ने भी अपनाया। इनमें कांग्रेस भी है। दिल्ली के नतीजों ने आप के साथ ही कांग्रेस को भी झटका दिया है। कांग्रेस लगातार तीसरी बार एक भी सीट नहीं जीत सकी।

शायद कांग्रेस को अब यह आभास हो कि उसने 2013 में केजरीवाल की सरकार बनवाकर भारी भूल की थी। वह ऐसी ही भूल क्षेत्रीय दलों को समर्थन देने की करती रही है। इससे ही कांग्रेस का भविष्य धूमिल हुआ है। कांग्रेस की असफलता

के लिए गांधी परिवार ही जिम्मेदार है, क्योंकि पार्टी की कमान उसके ही हाथ है। दिल्ली के नतीजों से उसे सबक सीखने होंगे।

आप के संस्थापक अरविंद केजरीवाल ने अपनी छवि एक जुझारू नेता की बनाई। वह मुख्यमंत्री रहते हुए धरने पर बैठे, लेकिन लड़ाकू नेता की उनकी छवि ने उन्हें नुकसान ही पहुंचाया, क्योंकि यह धारणा बनी कि वह अपना काम करने के बजाय लड़ाई-झगड़ा करना पसंद करते हैं। वह जब तक मुख्यमंत्री रहे, केंद्र सरकार से उलझते ही रहे। इससे दिल्ली को नुकसान हुआ।

दिल्ली पूर्ण राज्य नहीं है। यहां केंद्र के सहयोग के बिना शासन करना संभव नहीं। केंद्र से तनातनी के कारण दिल्ली में विकास और जनकल्याण के कई काम नहीं हो सके और आधारभूत ढांचे को भी नहीं सुधारा जा सका। राजनीतिक हठ की एक सीमा होती है। यदि इस सीमा को लांघा जाता है तो समस्याएं पैदा होती हैं। भाजपा ने केजरीवाल के समस्या पैदा करने वाले इसी रवैये का लाभ उठाया। भाजपा ने दिल्ली में जोरदार राजनीतिक सफलता मुख्यमंत्री के दावेदार की घोषणा किए बिना हासिल की।

भाजपा को इसका भी लाभ मिला कि उसकी चुनावी घोषणाओं को प्रधानमंत्री मोदी ने अपनी गारंटी बताकर दिल्ली की जनता को आश्वस्त किया। भाजपा इसलिए भी दिल्ली में भी बाजी पलटने में सफल रही, क्योंकि उसने प्रभावी रणनीति के साथ आरएसएस के साथ बेहतर सामंजस्य बैठाया और एकजुटता का प्रदर्शन किया। गुटबाजी दिल्ली भाजपा की एक बड़ी समस्या रही है। उम्मीद की जाती है कि यह समस्या फिर नहीं उभरेगी और भाजपा भावी मुख्यमंत्री के पीछे एकजुट दिखेगी।

चुनाव के समय आप की रंगत इसलिए फीकी दिख रही थी, क्योंकि उसका ज्यादातर समय आरोपों का जवाब देने में जाया हो रहा था। वह दिल्ली की समस्याओं के लिए केंद्र को दोष दे रही थी, लेकिन जनता को दिख रहा था कि आप सरकार अपने हिस्से के भी काम नहीं कर रही। दिल्ली की जनता को अपनी समस्याएं कम होने के स्थान पर बढ़ती दिख रही थीं। भले ही आप कैडर आधारित दल हो, लेकिन केजरीवाल ने धीरे-धीरे सारे संस्थापक सदस्य किनारे कर दिए। वह पार्टी के पर्याय बन गए। केजरीवाल जब दूसरों पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाते थे तो कहते थे कि इस्तीफा देकर खुद को निर्दोष साबित करो, लेकिन जब अपनी बारी आई तो उन्होंने इस नसीहत पर अमल नहीं किया। उन्होंने जेल से ही सरकार चलाने की जिद पकड़ी।

उन्होंने मजबूरी में तब इस्तीफा दिया, जब सुप्रीम कोर्ट ने यह शर्त लगा दी कि जमानत के दौरान वह मुख्यमंत्री कार्यालय नहीं जा सकते। उन्होंने इस्तीफा देकर आतिशी को मुख्यमंत्री तो बनाया, लेकिन चुनावों के पहले यह कह दिया कि पार्टी जीतती है तो वह फिर से मुख्यमंत्री बनेंगे। जेल जाने पर वह पत्नी सुनीता केजरीवाल को अपना उत्तराधिकारी बनाने की कोशिश करते दिखे थे। दिल्ली की सत्ता से बाहर हो जाने के बाद केजरीवाल की चुनौतियां बढ़ना तय है। देखना है कि वह दिल्ली में लगे झटके से उबर पाते हैं या नहीं?

(लेखक दैनिक जागरण के प्रधान संपादक हैं)

प्रदेश

बढ़ती महंगाई : चिंता का गम्भीर विषय

■ प्रकाश चंद्र शर्मा

आसमां छूती मंहगाई के कारण खरपतवार की मानिंद देश के नासमझ लोगों के दिमागों में निरंतर उपज रहे जनाक्रोश को शांत करने का एक उपाय मेरे खप्पत दिमाग में भी सूझा है। जब से होश संभाला है, मुझे सरकार के प्रति सहानुभूति रही है। मौजूदा राजनीति की भांति इसकी वजह भी पूरी तरह स्पष्ट और पारदर्शी है। राजा को लेकर प्रजा के दिमाग में चाहे जो भ्रम रहता हो लेकिन मेरा मत एकदम स्पष्ट है। चाहे किसी भी कालखण्ड की बात कर लें, राजा सदैव बैचेन रहा है। दिन में तनिक विश्राम की बात तो कोसों दूर, राजा रात में भी ठीक से नींद नहीं ले पाता है। सुकून की नींद आए भी तो कैसे? उसे पल-प्रति-पल अपनी प्रजा के पालन पोषण की चिन्ता सताती रहती है। इसके अलावा दरबारियों पर पैनी नजर भी रखनी पड़ती है। न जाने कौन और कब घात कर बैठे? विष कन्याओं के किस्से भी प्रत्येक राजा की परेशानी का एक बड़ा कारण रहे हैं। यदि राजा निरंकुश उर्फ तानाशाह प्रवृत्ति का है तो उसे अपनी परछाईं से भी डर लगने लगता है। परायों की बात तो दूर, वह अपने शुभचिंतकों में भी शत्रु की सूरत और सीरत देखने लगता है। दूसरे शब्दों में कहें तो उसे हर क्षण भय सताता रहता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सहानुभूति शब्द शायद ज्यादा ही हल्का प्रतीत हो रहा है इसलिए मैं जन प्रतिनिधियों की पालाबदल प्रवृत्ति की तरह कह सकता हूं कि सरकार में मेरी गहरी आस्था है। मेरी इच्छा है कि आस्थावादी होने के नाते सरकार को लील जाने को लालायित मंहगाई डायन की नाक में नकेल कसने के कुछ महत्वपूर्ण उपाय नीति निर्धारकों के समक्ष प्रस्तुत करूं। पैदाइशी अमीरों और दो नम्बर के सुगम मार्ग से धन संग्रह करने वाले सदपुरुषों की सेहत पर तो जीएसटी से कोई फर्क नहीं पड़ता लेकिन पांच किलो मुफ्त के अनाज को नक्षत्र की बूंद समझ चकोर की भांति अगले महीने की अनिर्धारित तारीख की ओर टकटकी लगाकर देखने वाले करोड़ों गरीबों पर फर्क पड़ता है। आटे को सूखा तो नहीं भसक सकते। जिस प्रकार सरकार चलाने के लिए एमएलए और एमपी की आवश्यकता पड़ती है, ठीक वैसे ही पिसे हुए आटे को मुंह के जरिए उदर तक सरकाने के लिए नमक, मसाले, तेल और सबसे सस्ती सब्जी की जरूरत पड़ती है। इच्छाओं का गला घोंटकर परिवार के बड़े लोग जीएसटी से आभूषित दूध-छाछ को अखाद्य पदार्थों की सूची में डाल दें, तब भी अबोध बच्चों को जिंदा रखने के लिए खरीदना करोड़ों परिवारों की मजबूरी है। छोटे निवाले के समस्त स्त्रोतों पर तो लग ही गई, श्वांस पर भी उपभोग की दर तय कर जीएसटी लगा दी जाए तो सरकार की बड़ी झोली अकूत धन से भर जाएगी। विज्ञान की गणना गवाह है कि एक इंसान सदियों से 24 घंटे में 550 लीटर ऑक्सीजन मुफ्त में हड़पता रहा है। 135 करोड़ से ज्यादा आबादी वाले अपने देश में मुफ्त की इस रेबड़ी पर पता नहीं सरकार का ध्यान क्यों नहीं गया? आबादी को तत्काल कम करने का सबसे बढ़िया उपाय तो यह है कि मय जीएसटी ऑक्सीजन के उपभोग की रुपए में दर तय कर दी जाए। यदि आबादी के प्रभावी नियंत्रण की दीर्घकालिक योजना पर चलें तो फिलवक्त ऑक्सीजन के उपभोग की दर न्यूनतम यानि 1 पैसे प्रति लीटर भी रखी जा सकती है क्योंकि जीएसटी भी तो लगानी पड़ेगी।

ईएनटी सर्जन के प्रदेश स्तरीय सेमिनार का आगाज

मॉर्निंग न्यूज @ जयपुर। जयपुर के आरआईसी में शनिवार से ईएनटी सर्जन के प्रदेश स्तरीय सेमिनार का आगाज हुआ। दो दिवसीय सेमिनार में प्रदेश के आठ सौ से ज्यादा ईएनटी सर्जन भाग लेंगे। सेमिनार में चिकित्सक विभिन्न बीमारियों को लेकर अपने अनुभव साझा करेंगे। आरएजेएओआईसीओएन के ऑर्गेनाइजिंग सैक्रेटरी डॉ. अंजनी शर्मा ने बताया कि इससे पूर्व शुक्रवार को सी स्कीम स्थित ऑन्जनेय ईएनटी अस्पताल में सेमिनार का आगाज हुआ। सेमिनार के पहले दिन प्रदेश के ईएनटी सर्जन ने लाइव सर्जरी कर रोगों की जटिलताओं के बारे में बताया। सेमिनार में चैन्नई के डॉ. रवि रामालिंगम और बैंगलूरू के डॉ. संपत चन्द्र, प्रसाद राव, हैदराबाद के डॉ. श्रीनिवास किशोर, मुम्बई के डॉ. विकास अग्रवाल, अहमदाबाद के डॉ. देवांग गुप्ता ने कई जटिल सर्जरी की।

कॉर्पोरेट का वर्ल्ड कप में सीजन 2 की ट्रॉफी और टीम जर्सी का अनावरण

मॉर्निंग न्यूज @ जयपुर। जयपुर कॉर्पोरेट क्रिकेट एसोसिएशन द्वारा आयोजित कॉर्पोरेट का वर्ल्ड कप - सीजन 2 का आयोजन 22 फरवारी से होने जा रहा है। कल देर रात हुए एक कार्यक्रम में इस लीग की जर्सी और ट्रॉफी का अनावरण किया गया। जेसीसीऐ के संस्थापक तरुण अग्रवाल, सौरव पांडे, महेन्दर मीणा और प्रवर शर्मा ने इस आयोजन के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि इस सीजन में भाग लेने वाली प्रमुख कॉर्पोरेट टीमें एचडीफसी, नव जयपुर, एनबीसी, हीरो मोटो, एडब्ल्यूपीएल, डॉयचे बैंक, मेटलाइफ, टीपी और पिनेकल इन्फोटेक होंगी और इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, पूर्व क्रिकेटर रोहित झलानी रहे। इसके अलावा विशिष्ट अतिथियों में ओ.पी. ओझा (नॉर्थ हेड, एचडीफसी), विवेक अग्रवाल (सीनियर वाइस प्रेसिडेंट, नव), अतिशय जैन (मैनेजिंग डायरेक्टर, गोल्डन डिवाइन), राजेश विजय (वाइस प्रेसिडेंट, नव), लोकेश अरोड़ा (वेल्थ कंसल्टेंट), शामिल थे। मुख्य अतिथि रोहित झलानी ने अपने संबोधन में कहा जेसीसीऐ द्वारा कॉर्पोरेट क्रिकेट को बढ़ावा देने के प्रयासों की सराहना की और खेल के माध्यम से टीम वर्क और नेतृत्व कौशल के विकास पर जोर दिया।

एसएमएफजी इंडिया क्रेडिट ने नई ब्रांड फिल्म का किया अनावरण

मॉर्निंग न्यूज @ अजमेर

अजमेर। एसएमएफजी इंडिया क्रेडिट ने अपनी नई ब्रांड फिल्म लॉन्च की है जो उम्मीद, बदलाव और असीम संभावनाओं की आकर्षक कहानी पेश करती है। यह फिल्म छोटे और मध्यम आकार के व्यवसाय मालिकों को अपने ऋण प्रस्ताव के ज़रिये सशक्त बनाने के लिए कंपनी की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डालती है, जिससे उन्हें बड़े सपने देखने, बढ़ने और फलने-फूलने में मदद मिलती है। हास्य से भरपूर म्यूजिकल फॉर्मैट में प्रस्तुत की गई यह फिल्म एक छोटे खुदरा विक्रेता की कहानी बयां करती है जो अपना कारोबार बढ़ाना चाहता है।

यह फिल्म दिखाती है कि कैसे एक एसएमएफजी इंडिया क्रेडिट बिज़नेस लोन उसका जीवन बदल देता है, उसे एक नई पहचान बनाने और वित्तीय प्रगति हासिल करने में मदद करता है।

एसएमएफजी इंडिया क्रेडिट के मुख्य व्यवसाय अधिकारी, अजय पारीक ने फिल्म पर टिप्पणी करते हुए कहा, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एसएमई) का भारत के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 30 प्रतिशत योगदान है और रोज़गार सृजन में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। हालांकि, उन्हें अक्सर औपचारिक ऋण प्राप्त करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। यह ब्रांड फिल्म इस बात पर जोर देती है कि कैसे एसएमएफजी इंडिया क्रेडिट बिजनेस लोन (व्यवसाय ऋण) छोटे खुदरा विक्रेताओं को वित्तीय सहायता प्रदान करता है और आकर्षक ब्याज दरें, न्यूनतम दस्तावेज तथा आसान पुनर्भुगतान की सुविधा प्रदान करता है।

हमारे पास कहानी कहने की एक अनूठी शैली है यानी हास्य मिश्रित संगीतमय कविता क्योंकि यह हमारे लक्षित दर्शकों तक संदेश पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

अक्षराभिषेकोत्सव में सम्मानित हुए विधायक गोपाल शर्मा

मॉर्निंग न्यूज @ जयपुर/फिरोजाबाद

उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद में सामाजिक संस्था श्रुत सेवा निधि न्यास की ओर से आयोजित अक्षराभिषेकोत्सव-2025 में सिविल लाइंस विधायक एवं वरिष्ठ पत्रकार गोपाल शर्मा को पत्रकारिता, लेखन और सामाजिक सेवा कार्यों के लिए सम्मानित किया गया।

श्रुत सेवा निधि न्यास के निदेशक एडवोकेट अनूपचंद्र जैन ने बताया कि समारोह में विधायक शर्मा को शांति देवी गुप्त श्रुत सेवा अंलकरण सम्मान के तहत 25,000 रुपए की सम्मान निधि, प्रशस्ति पत्र, माला, शॉल, प्रतीक चिह्न और साहित्य भेंट किया गया। समारोह को संबोधित करते हुए को विधायक गोपाल शर्मा ने कहा कि फिरोजाबाद की धरती बहुआयामी प्रतिभाओं से संपन्न है। यहां स्वतंत्रता संग्राम के चिह्न भी हैं, व्यवसाय कुशलता के संस्कार भी हैं, शिक्षा का वातावरण भी है और आध्यामिकता की सुगंध

भी है। श्रुत सेवा निधि न्यास के सामाजिक योगदान को रेखांकित करते हुए शर्मा ने कहा कि इस संस्था द्वारा सम्मान प्राप्त करना गौरव का विषय है। यह मेरे लिए व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है, यह सम्मान मैं भारतीय पत्रकारिता की समृद्ध और सशक्त परंपरा को समर्पित करता हूं। उन्होंने कहा कि यह पत्रकारिता की ही ताकत है, जिसकी बदौलत सिविल लाइंस की जनता का विश्वास जीतना संभव हुआ।